

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजी०) चेन्नई

ज्योतिष प्रवीण परीक्षा : जून-2010

प्रश्न पत्र-III

समय : 3 घन्टे

कुल अंक : 50

कोई भी पाँच प्रश्न हल करें। प्रश्न 1 तथा 6 अनिवार्य हैं। दोनों भागों में से कम से कम एक-एक प्रश्न का चयन करते हुए तीन अन्य प्रश्नों के उत्तर दें। सब प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग-I (ज्योतिष योग)

1. धन व वैवाहिक सुख के लिए किन भावों का अध्ययन किया जाता है? निम्न पत्रिका पर इन दोनों का विचार करें :-
लग्न - तुला 26:24, सूर्य - कर्क 18:59, चन्द्र - वृषभ 6:47
मंगल - सिंह 29:05, बुध - कर्क 8:30, गुरु (व) - मकर 7:34
शुक्र - मिथुन 8:10, शनि (व) - मकर 2:01, राहु - सिंह 3:59
2. राज योग क्या हैं? क्या प्रश्न 1 में दिए जन्मांग में, राज योग उपस्थित हैं? उनके क्या परिणाम हैं?
3. क. मारक स्थान कौन से हैं? प्रश्न 1 के जातक के लिए कौन से ग्रह मारक हैं?
ख. प्र. 1 के जातक के सामान्य स्वास्थ्य पर चर्चा करें।
4. वर्ग कुण्डलियां कौन सी है? फलादेश में उनका क्या उपयोग है?
5. निम्न का उत्तर दें।
क. उदाहरण सहित विपरीत राज योग समझाएं।
ख. उदाहरण सहित केन्द्र अधिपत्य दोष समझाएं।

भाग-II (दशा व गोचर)

6. क. प्रश्न 1 में दी कुण्डली के सभी महादशाओं व बृहस्पति महादशा में अंतर दशाओं की गणना करें।
ख. इसी जातक की बृहस्पति महादशा में सूर्य अन्तर दशा का फलादेश करें।
7. जन्मांग में चन्द्रमा से द्वादश, प्रथम व द्वितीय भाव से शनि गोचर के क्या फल मिलते हैं?
8. निम्न के उत्तर दें :-
क. गोचर में वक्री ग्रह किस प्रकार फल देते हैं?
ख. योगिनीधन्य महादशा में सभी अन्तरदशाओं के सामान्य फल बताएं।
ग. द्विग्रह गोचर सिद्धान्त क्या हैं? इसका क्या उपयोग है?
घ. लत्ता क्या हैं?
9. सामान्यतौर पर गोचर फल जन्म के चन्द्रमा के आधार पर जाने जाते हैं। इन गोचर के पारंपरिक फलों में विशेष परिस्थितियों में किस प्रकार बदलाव आते हैं (जैसे वेध, विपरित वेध आदि)।
10. क. शनि महादशा के सामान्य फल बताएं?
ख. गोचर बृहस्पति के सामान्य फलों पर चर्चा करें।